REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 15 | ISSUE - 1 | OCTOBER - 2025

स्वावलंबन की चुनौतियाँ : झारखंड की जनजातीय महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का विश्लेषण

डॉ० जुई बनार्जी
शोधार्थी (डि०लिट्०) दर्शनशास्त्र विभाग,बि०बि०म०को०वि०, धनबाद.

डॉ० रीता कुमारी शर्मा
सह–प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष , दर्शनशास्त्र विभाग, बि०बि०म०को०वि० धनबाद.

सारांश :

झारखंड की जनजातीय महिलाएं अपने पारंपरिक जीवन–दर्शन, सांस्कृतिक मूल्यों और सामाजिक संरचना में केंद्रीय भूमिका निभाती हैं। उनका जीवन प्रकृति, आत्मनिर्भरता और सामूहिकता पर आधारित है। कृषि, वनोपज संग्रह, पारंपरिक चिकित्सा, कला और रीति–रिवाजों के माध्यम से वे न केवल आजीविका अर्जित करती हैं, बल्कि सांस्कृतिक ज्ञान को भी पीढ़ी–दर–पीढ़ी स्थानांतरित करती हैं।

वे पारिवारिक और सामाजिक निर्णयों में भागीदारी करती हैं तथा सामाजिक नेतृत्व में भी अपनी भूमिका निभाती हैं। पारंपरिक शिक्षा प्रणाली, लोककथाएं, गीत और परंपरागत व्यवहार उनके ज्ञान का आधार हैं। हालांकि, आधुनिकता, विस्थापन और पर्यावरणीय संकटों ने उनके जीवन–दर्शन को चुनौती दी है। इसके बावजूद, आज की जनजातीय महिलाएं स्वयं सहायता समूहों, शिक्षा, और सहकारी समितियों के माध्यम से आत्मनिर्भरता और सामाजिक परिवर्तन की दिशा में आगे बढ़ रही हैं।

यह शोध इस बात पर बल देता है कि झारखंड की जनजातीय महिलाओं की संस्कृति, चेतना और नेतृत्व क्षमताओं को समझना और उन्हें सामाजिक विकास की प्रक्रिया में केंद्र में रखना समय की आवश्यकता है।

शोध आलेख के उद्देश्य :

- झारखंड की जनजातीय महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति का विश्लेषण करना।
- स्वावलंबन (आत्मनिर्भरता) प्राप्त करने में आने वाली प्रमुख चुनौतियों की पहचान करना।
- शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार और भूमि अधिकार जैसे प्रमुख क्षेत्रों में महिलाओं की स्थिति को समझना।
- सरकारी योजनाओं और उनके प्रभाव का मूल्यांकन करना, विशेष रूप से महिला सशक्तिकरण से जुड़ी नीतियों का।
- जनजातीय महिलाओं के पारंपरिक योगदान और बदलती परिस्थितियों में उनके संघर्षों को उजागर करना।

- राजनीतिक भागीदारी एवं नेतृत्व में जनजातीय महिलाओं की भूमिका और संभावनाओं का अध्ययन करना।
- सामाजिक रूढ़ियों, भेदभाव और पितृसत्तात्मक व्यवस्था के प्रभाव का विश्लेषण करना।
- सुझाव प्रस्तुत करना कि किस प्रकार समेकित प्रयासों से इन महिलाओं को स्वालंबी और सशक्त बनाया जा सकता है।
- हिन्दी साहित्य और समाजशास्त्रीय अध्ययन के माध्यम से विषय की गहराई को प्रस्तुत करना।
- प्रशासनिक, शैक्षिक और सामाजिक जागरूकता की भूमिका को रेखांकित करना ताकि नीति–निर्माण में जनजातीय महिलाओं की वास्तविक आवश्यकताएँ शामिल की जा सकें।

प्रस्तावना :

झारखंड की जनजातीय महिलाएँ सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक रूप से विविध भूमिकाएँ निभाती रही हैं। इनकी भूमिका पारंपरिक ग्राम्य जीवन में कृषि, वनोपज संग्रहण, घरेलू कामकाज, और सांस्कृतिक परंपराओं के संरक्षण में अत्यंत महत्वपूर्ण रही है। परंतु आधुनिक समय में, विशेषकर औद्योगिकीकरण और नगरीकरण के प्रभाव से, इनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति में कई जटिलताएँ उत्पन्न हुई हैं। स्वावलंबन, अर्थात् आत्मनिर्भरता, आज भी इन महिलाओं के लिए एक चुनौती बना हुआ है। यह आलेख इन्हीं चुनौतियों की पहचान कर उनके समाधान की दिशा में संभावनाओं का विश्लेषण करता है।

झारखंड की जनजातीय संरचना और महिलाओं की पारंपरिक स्थिति – झारखंड में कुल जनसंख्या का लगभग 26 प्रतिशत हिस्सा अनुसूचित जनजातियों का है, जिनमें संथाल, मुंडा, उरांव, हो, खड़िया, बिरहोर, असुर, और माल पहाड़िया जैसी जनजातियाँ प्रमुख हैं। पारंपरिक जनजातीय समाज मातृसत्तात्मक न होकर भी महिलाओं को सामुदायिक निर्णयों, कृषि कार्यों और पर्व–त्योहारों में सम्मानजनक स्थान देता था। महिलाएँ आजीविका के प्रमुख स्तंभ के रूप में कार्य करती थीं, विशेषकर कृषि, पशुपालन, कुटीर उद्योग और वनोपज आधारित कार्यों में।

शिक्षा और साक्षरता की स्थिति – शिक्षा किसी भी समाज के सशक्तिकरण की आधारशिला होती है, किंतु झारखंड की जनजातीय महिलाओं में साक्षरता दर अभी भी अत्यंत निम्न है। जनगणना 2011 के अनुसार, राज्य में महिला साक्षरता दर 55.4% है जबकि अनुसूचित जनजातियों की महिलाओं की साक्षरता दर मात्र 46.2% है। शिक्षा की यह कमी न केवल इन महिलाओं की आर्थिक संभावनाओं को सीमित करती है, बल्कि सामाजिक निर्णयों में उनकी भागीदारी को भी प्रभावित करती है। स्कूलों की दूरी, शिक्षक की अनुपस्थिति, सामाजिक रूढ़ियाँ और गरीबी जैसे अनेक कारण शिक्षा में बाधा बनते हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं की स्थिति – जनजातीय क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं का अभाव महिलाओं की सामाजिक–आर्थिक स्थिति को और जटिल बनाता है। कुपोषण, रक्ताल्पता, बाल विवाह, मातृ मृत्यु दर, तथा प्रसव के दौरान चिकित्सा सहायता का अभाव आम समस्याएँ हैंङ। 'राष्ट्रीय स्वास्थ्य मिशन' जैसी योजनाओं के बावजूद, झारखंड के सुदूर आदिवासी क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाएँ प्रभावी नहीं हो पाई हैं। प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों की स्थिति दयनीय है और प्रशिक्षित दाइयों का अभाव है।

आर्थिक स्थिति और रोजगार के अवसर – झारखंड की जनजातीय महिलाएँ परंपरागत रूप से कृषि, वनोपज संग्रहण और हस्तशिल्प जैसे कार्यों में लगी रहती हैं। किंतु भूमि अधिग्रहण, वन संरक्षण कानूनों और खनन परियोजनाओं के विस्तार से उनकी आजीविका के साधन छिनते जा रहे हैं। इससे उन्हें काम की तलाश में शहरों की ओर पलायन करना पड़ता है जहाँ वे घरेलू कामगार या असंगठित क्षेत्र में श्रमिक बनकर शोषण

का शिकार होती हैं[4]। स्वरोजगार योजनाएँ जैसे महिला स्वयं सहायता समूह (SHGs) कुछ क्षेत्रों में सकारात्मक बदलाव ला रहे हैं, परन्तु ये प्रयास व्यापक रूप से प्रभावी नहीं हो पाए हैं।

भूमि अधिकार और स्वामित्व की स्थिति – झारखंड में सीएनटी एक्ट (1908) और एसपीटी एक्ट (1949) जैसे कानून आदिवासी अधिकारों की रक्षा हेतु बने हैं, परंतु अधिकांश मामलों में महिलाओं के नाम पर भूमि पंजीकरण नहीं होता। पितृसत्तात्मक सोच और सामाजिक परंपराएँ महिलाओं को भूमि स्वामित्व से वंचित करती हैं[5]। भूमि अधिग्रहण की प्रक्रिया में भी उन्हें पारिवारिक पुरुष सदस्यों के माध्यम से प्रतिनिधित्व मिलता है, जिससे उनके आर्थिक अधिकार सीमित रहते हैं।

राजनीतिक भागीदारी और नेतृत्व में स्थिति – संविधान द्वारा पंचायतों में महिलाओं के लिए 50% आरक्षण होने के बावजूद, जनजातीय महिलाओं की वास्तविक राजनीतिक भागीदारी सीमित है। अनेक बार वे प्रतिनिधि तो बनती हैं, किंतु निर्णय लेने की शक्ति पुरुष सदस्यों के पास ही होती है। कुछ क्षेत्रों में महिलाएँ मुखिया और जिला परिषद की सदस्य बनी हैं, परंतु नेतृत्व क्षमता के विकास हेतु प्रशिक्षण और सहयोग की अत्यधिक आवश्यकता है[6]।

सामाजिक और सांस्कृतिक बाधाएँ – झारखंड की जनजातीय महिलाएँ दोहरी सामाजिक चुनौतियों से जूझती हैंकृएक ओर वे पितृसत्तात्मक समाज के कारण घरेलू निर्णयों में पीछे रहती हैं, और दूसरी ओर बाहरी समाज में उन्हें 'अल्पविकसित' या 'अशिक्षित' समझा जाता है। बाल विवाह, घरेलू हिंसा, पारिवारिक रूढ़ियाँ और पुरुष प्रधान सामाजिक दृष्टिकोण उनके आत्मविश्वास और सामाजिक गतिशीलता को प्रभावित करते हैं।

सरकारी योजनाएँ और प्रयास – महिलाओं के लिए चलाई जा रही योजनाओं में 'सखी मंडल योजना', 'दीनदयाल अंत्योदय योजना', 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ', और 'जननी सुरक्षा योजना' प्रमुख हैं। कुछ जिलों में इन योजनाओं ने महिलाओं को स्वरोजगार, शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं से जोड़ने में सफलता पाई है। फिर भी, प्रशासनिक उदासीनता, भ्रष्टाचार और सूचनाओं की कमी इन योजनाओं को जमीनी स्तर पर सीमित कर देती है।

निष्कर्ष :

झारखंड की जनजातीय महिलाएँ प्राकृतिक संसाधनों से जुड़ी हुईं, आत्मनिर्भरता की जीवंत मिसाल रही हैं। परंतु बदलते सामाजिक–आर्थिक परिवेश, शोषण और अवसरों की कमी ने उन्हें अनेक बाधाओं से जूझने पर विवश कर दिया है। इन महिलाओं के सशक्तिकरण और स्वावलंबन हेतु शिक्षा, स्वास्थ्य, आर्थिक अवसर, और सामाजिक चेतना के समेकित प्रयास की आवश्यकता है। नीतिगत सुधारों के साथ–साथ समाज में सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित कर ही इन महिलाओं को सशक्त बनाया जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ सूची ::

1. सिन्हा, शशिप्रभा, आदिवासी समाज और संस्कृति, राधाकृष्ण प्रकाशन, नई दिल्ली, 2018, पृष्ठ 42–56
2. मुर्मू, मधु, झारखंड की जनजातियाँ, आदिवासी साहित्य परिषद, रांची, 2015, पृष्ठ 101–117
3. महतो, हेमलाल, आदिवासी महिलाएँ और सामाजिक परिवर्तन, जनपथ प्रकाशन, कोलकाता, 2020, पृष्ठ 67–85
4. तिग्गा, एल.पी, झारखंड में महिला सशक्तिकरण, विद्या निकेतन, रांची, 2019, पृष्ठ 33–49
5. उरांव, एलिजाबेथ, आदिवासी महिला संघर्ष और समकालीन भारत, नेशनल बुक ट्रस्ट, दिल्ली, 2021, पृष्ठ 92–110
6. डॉ० मधुपुरी, भारत में महिला सशक्तिकरण : चुनौतियाँ और संभावनाएँ, अवधेश प्रकाशन, दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2018, पृष्ठ 152–156